चौहान, परमार एवं प्रतिहार वंश

---

1. चौहान वंश (चाहमान)

1.1 परिचय

1. चौहान वंश राजस्थान के प्रमुख **राजपूत वंशों** में से एक है
2. चौहान स्वयं को —
    - **अग्निकुल राजपूत** मानते हैं
3. चौहान वंश का सर्वाधिक प्रभाव —
    - अजमेर, दिल्ली एवं आसपास के क्षेत्रों में रहा

1.2 उत्पत्ति

1. अग्निकुल सिद्धांत के अनुसार —
    - चौहान की उत्पत्ति आबू पर्वत के अग्निकुंड से मानी जाती है
2. ऐतिहासिक दृष्टि से —
    - चौहान एक शक्तिशाली क्षेत्रीय क्षत्रिय वंश के रूप में उभरे

1.3 प्रमुख शाखाएँ

1. शाकंभरी (अजमेर) चौहान
2. नाडोल चौहान
3. रणथंभौर चौहान
4. जालोर चौहान

1.4 प्रमुख शासक

(क) अजयपाल

1. अजमेर नगर की स्थापना
2. चौहान शक्ति को संगठित किया

(ख) पृथ्वीराज चौहान

1. चौहान वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक

@localupdates.in

2. राजधानी — अजमेर
3. प्रमुख युद्ध —
    - तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)
    - तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)
4. मुहम्मद गोरी से संघर्ष
5. पराजय के बाद —
    - चौहान शक्ति का पतन प्रारम्भ

1.5 ऐतिहासिक महत्व

1. उत्तर भारत की रक्षा
2. तुर्क आक्रमणों का कड़ा प्रतिरोध
3. राजपूती शौर्य का प्रतीक

2.परमार वंश

2.1 परिचय

1. परमार वंश —
    - मध्य भारत व राजस्थान का प्रमुख राजपूत वंश
2. परमार भी —
    - **अग्निकुल राजपूत** माने जाते हैं
3. प्रमुख क्षेत्र —
    - मालवा, आबू, जालोर क्षेत्र

2.2 उत्पत्ति

1. अग्निकुल सिद्धांत से संबंधित
2. ऐतिहासिक रूप से —
    - मालवा क्षेत्र में शक्तिशाली राज्य की स्थापना

2.3 प्रमुख शासक

(क) उपेन्द्र / कृष्णराज

1. परमार वंश के संस्थापक

@localupdates.in

2. मालवा में सत्ता की स्थापना

(ख) राजा भोज

1. परमार वंश का महानतम शासक
2. शासन काल — 11वीं शताब्दी
3. विशेषताएँ:
    - विद्वान शासक
    - साहित्य, विज्ञान व शिक्षा का संरक्षण
4. प्रमुख योगदान:
    - भोजशाला
    - संस्कृत साहित्य का विकास

2.4 सांस्कृतिक योगदान

1. शिक्षा एवं साहित्य का उत्कर्ष
2. स्थापत्य कला का विकास
3. धार्मिक सहिष्णुता

2.5 ऐतिहासिक महत्व

1. मालवा को सांस्कृतिक केंद्र बनाया
2. विद्वान शासकों की परंपरा
3. मध्यकालीन ज्ञान-विकास में योगदान

3.प्रतिहार वंश (गुर्जर-प्रतिहार)

3.1 परिचय

1. प्रतिहार वंश —
    - प्रारम्भिक मध्यकाल का सबसे शक्तिशाली राजवंश
2. प्रतिहारों को —
    - **गुर्जर-प्रतिहार** भी कहा जाता है
3. प्रमुख क्षेत्र —
    - राजस्थान, उत्तर भारत

@localupdates.in

3.2 उत्पत्ति

1. प्रतिहार भी —
    - **अग्निकुल राजपूत** माने जाते हैं
2. कुछ इतिहासकार —
    - इन्हें गुर्जर जाति से संबंधित मानते हैं

3.3 प्रतिहार साम्राज्य का उदय

1. 8वीं–9वीं शताब्दी में उत्कर्ष
2. राजधानी —
    - कन्नौज
3. अरब आक्रमणों को रोका

3.4 प्रमुख शासक

(क) नागभट्ट प्रथम

1. प्रतिहार शक्ति के संस्थापक
2. अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया

(ख) मिहिर भोज (भोज प्रथम)

1. प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली शासक
2. विशाल साम्राज्य
3. कुशल प्रशासक एवं योद्धा

3.5 त्रिपक्षीय संघर्ष

1. प्रतिहार
2. पाल
3. राष्ट्रकूट
4. संघर्ष का कारण —
    - कन्नौज पर अधिकार

3.6 ऐतिहासिक महत्व

1. अरब आक्रमणों से भारत की रक्षा
2. उत्तर भारत में स्थिरता

@localupdates.in

3. राजपूत सत्ता की नींव

4.परीक्षा उपयोगी तुलना (One Look)

1. चौहान — तराइन युद्ध, पृथ्वीराज
2. परमार — राजा भोज, सांस्कृतिक उत्कर्ष
3. प्रतिहार — अरब आक्रमणों का प्रतिरोध

5.Quick Revision Points

1. तीनों वंश — अग्निकुल से संबंधित
2. चौहान — अजमेर
3. परमार — मालवा
4. प्रतिहार — कन्नौज
5. सबसे शक्तिशाली साम्राज्य — प्रतिहार

---

6. निष्कर्ष

चौहान, परमार और प्रतिहार वंश —

1. प्रारम्भिक मध्यकाल के **स्तंभ** थे
2. इन्होंने —
    - भारत की राजनीतिक
    - सैन्य
    - सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूत किया
3. राजपूत इतिहास की नींव इन्हीं वंशों ने रखी

@rcalupdates.in